

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्॥ ऋ० १/८६/२



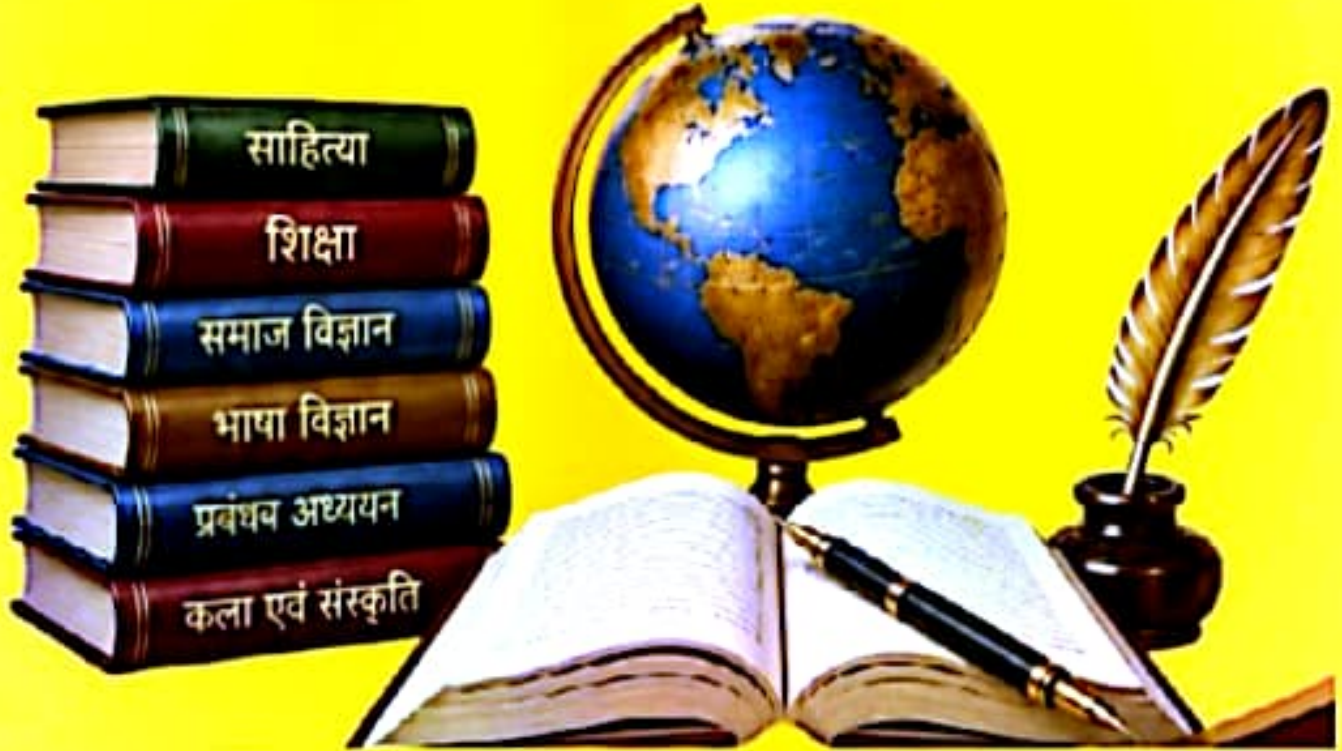
Impact Factor
8.642



ISSN : 2395-7115
Aug. 2026
Vol.-24, Issue-2

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES PRINT RESEARCH JOURNAL



Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

Publisher :

Gagan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

अनुक्रमाणिका - अगस्त 2026

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. नरेश सिहाण	09-10
2.	युद्ध, शांति और मानवता के संदर्भ में आधुनिक हिंदी कविता	डॉ. आरती देवराडी	11-17
3.	भोजपुरी भाषा, संस्कृति और समाज	डॉ. निर्मला जोशी	18-23
4.	उपन्यास बेघर में प्रेम : परिवार का प्राणतत्व	उर्मिला, डॉ. निशा शर्मा	24-27
5.	अंग्रेजी पठन कौशल के विकास में पुनरावृत्त पठन तकनीक की भूमिका : एक समीक्षात्मक अध्ययन	Pratibha Raman	28-38
6.	शैलेश मटियानी के कथा साहित्य में नारी जीवन	सुनीता, डॉ० रेखा चौधरी	39-43
7.			



देवानां भद्रा सुमतिर्जगूयताम्॥ क्र० १/८६/२

ISSN : 2395-7115



बोहल शोध मञ्जूषा Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Publisher : Gagan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

[भाग III – खण्ड 4]

भारत का संवत्सः असाधारण

105

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc.,)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals	08 per paper	10 per paper
2.	Publications (other than Research papers)		
	(a) Books authored which are published by :		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

🌐 www.bohalsm.blogspot.com

✉ grsbohals@gmail.com

☎ 8708822674

📞 9466532152



शैलेश मटियानी के कथा साहित्य में नारी जीवन

सुगीता, शोधार्थी

डॉ० रेखा चौधरी, एसोसिएट प्रोफेसर, शोध निर्देशिका

हिंदी विभाग, ए० के० पी० पी० जी० कॉलेज, खुरजा (बुलन्दशहर)

शैलेश मटियानी के कथा साहित्य में यथार्थ की नई जमीन तथा अनुभवों का नया संसार था जिसमें व्यक्ति जीवन जीने की लड़ाई आर्थिक स्तर पर लड़ रहा था। निम्न व मध्यम वर्ग भ्रष्ट व्यवस्था के कारण असंतोष की जिंदगी जी रहा था। शैलेश मटियानी की रचनाओं में जीवन के विविध पक्षों को उजागर करते हुए जहां भूख, गरीबी, व दबे कुचले लोगों को स्थान दिया है तो वहीं नारी जीवन के विविध रूपों को भी चित्रित किया है। नारी जीवन के विविध रूपों को हम अर्धांगिनी, सुहागिन, कपिला, असमर्थ, कालिका अवतार, रुकमी, माता, चौथी मुट्ठी, गोपुली गफूरन, उसने तो नहीं कहा था, खरबूजा, छाक पाप मुक्ति आदि कहानियों तथा सवित्तरी, डेरेवाले, बोरीयली से बोरीबंदर, कबूतर खाना, किरसा, नर्मदाबेन, गंगूबाई, कोई अजनबी नहीं, मंजिल दर मंजिल, सर्पगंधा आदि उपन्यासों में देख सकते हैं जहां नारी कहीं समझौता तो कहीं विद्रोह करती हुई अपनी अस्मिता की खोज करती निम्नलिखित रूपों में दिखाई देती है।

(१) **विभिन्न उत्तरदायित्व और नारी** - शैलेश मटियानी की रचनाओं में नारी सामाजिक पारिवारिक व आर्थिक उत्तरदायित्वों को निभाती स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। पारिवारिक दायित्वों में स्त्री दांपत्य जीवन का निर्वाह मातृत्व उत्तरदायित्व व परिवार के पालन पोषण का भार उठाने में योगदान देती है। "अर्धांगिनी" कहानी में रुकमा सूबेदारनी दांपत्य जीवन का निर्वाह तो करती है साथ ही परिवार में सभी की अपेक्षाओं पर भी खरी उतरती है। रुकमा सूबेदारनी अपने अर्धांगिनी रूप को प्रत्यक्ष भूमि पर स्थापित करती है। वह पति पत्नी के संबंधों की डोर को मजबूत रखकर अर्धांग भाव की गरिमामय उपस्थिति प्रतिष्ठित करती है। उसके परिवार के लिए किये गए किसी भी कार्य में अभिमान का भाव न होकर अर्धांगिनी होने की आकांक्षा ही ध्यनित होती है।

"तुम जब यहां रात दिन हम लोगों की चिंता में घुलते रहने वाले हुए, तब कुछ नहीं एक दिन को तुम्हारा बोझ हमारे सर पर आ गया, तो क्या पर्वत आ गया ठहरा? सर के ताज तो तुम ही हुए"।^(१)

रुकमा सूबेदारनी निरवार्थ भाव से पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करती है, जिसमें वह सद्बुद्ध नारी घर की शोभा बनकर स्वस्थ परिवार की स्थापना करती है। इसी प्रकार "महाभोज" कहानी की नायिका शिवरत्ती भी गरीबी में जीवन यापन करती है। पति चौतीराम में बुरी आदतें तो हैं ही साथ ही बेरोजगार भी है। शिवरत्ती बूढ़े ससुर की सेवा करती है। ससुर की मृत्यु होने पर पति चौतीराम पारिवारिक व सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करने में स्वयं को असमर्थ महसूस करता है। तब शिवरत्ती धन के अभाव के कारण सामाजिक कर्तव्यों के निर्वहन

के लिए अपनी करधनी को बेचकर ससुर का महाभोज कराती है।

“शिवरत्ती को इतना संतोष जरूर अनुभव हुआ कि चलो २४ घंटे कमर पर रहने वाली ५० तोले की करधनी तो गई मगर पितरों का ऋण निपट गया”^(१)

इस तरह शिवरत्ती पारिवारिक दायित्वों व सामाजिक कर्तव्यों को संतुलन के साथ निभाने की कोशिश में सफल होती है। शिवरत्ती जानती हैं कि समाज द्वारा बनाई गई रूढ़ियों व परंपराओं का विरोध व्यक्ति आसानी से नहीं कर सकता क्योंकि व्यक्ति जीवन पर्यंत समाज का अभिन्न अंग बनकर रहता है। इसीलिए शिवरत्ती सामाजिक कर्तव्यों को निभाने के साथ आत्मसंतोष अनुभव करती है।

“कुसुमी” कहानी में कुसुमी घर के कार्यों को करने के साथ-साथ खेतों का भी कार्य संभालती है। कुसुमी मेहनत करके अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करना चाहती है।

“कुसुमी को केशर सिंह के साथ ही खेतों पर डलिया फोड़ने, खाद फैलाने जाना है। दोपहर की रसोई के लिए चावल कूटने को कुसुमी उठी थी तब दिशा भी नहीं खुली थी मसाल जलाकर धान कूटे थे उसने, धान कूटने के बाद गाय भैंस का दूध लगाकर और चाय पीकर गोठों की सफाई करते-करते कुसुमी के माथे पर भोर की धूप उतर आई”^(२)

निष्कर्षतः शैलेश मटियानी के नारी पात्र विभिन्न उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए स्वयं को आत्मसंतोष की भावना से तृप्त करती है।

(२) शोषण का विरोध करती नारी : शैलेश मटियानी की रचनाओं में निम्न वर्गीय समाज का चित्रण मिलता है जहां पर जीवन जीने के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परिवार का पेट भरने के लिए स्त्रियों को भी काम करना पड़ता है। निम्न वर्गीय समाज में अभावों से भरा जीवन जीने के बाद भी स्त्री का समझदार साहसी तथा आत्म सम्मान से जीने वाला रूप भी दिखाई देता है। नरकीय जीवन जीने के बाद भी वह शोषण के विरुद्ध आवाज उठाती दिखाई देती है।

“बावन नदियों का संगम” उपन्यास की नायिका गुलाब स्वयं वैश्या जीवन जीती है, लेकिन श्यामा की बेटी कंचन को इस पेशे में आने का विरोध करती है और वह भोला को भगाते हुए चिल्लाती है :

“भाग मत गैरत नाम की चीज हो तो यही गली में की गंद खा और या खुदकुशी कर ले या मुझसे कह कि गुलाब अम्मा, जिन हाथों से पोस्ती रही हो, उन्हीं से मुझ कुत्ते की बोटी-बोटी करके नाली में फेंक दो”^(३)

इसी प्रकार सवित्तरी की नायिका सवित्तरी भी उस पर कुदृष्टि रखने वाले लडके से कहती हैं :

“दूंगी एक झापड़ तो सारी गुंडागिरी भूल जाओगे! आने दो आज अम्मा बाबूजी को घर”^(४)

इस प्रकार “चौथी मुहूर्ती” की मोतिमा, गोपुली गफूरन की गफूरन, कपिला, करवा, कलिका अवतार की ठकुरानी भी शोषण के विरुद्ध आवाज उठाती है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं शैलेश मटियानी के स्त्री पात्र साहस का परिचय देते हुए शोषण के प्रति आवाज उठाती चित्रित हुई हैं।

(३) गरीबी से बेबस नारी जीवन : गरीब उपेक्षित तथा फुटपाथों पर जीवन जीने वाले निम्न वर्ग की आर्थिक स्थिति क्षीण होने के कारण यह स्त्रियां मजबूरी में भीख मांगना तथा दैनिक धंधे में संलिप्त हो जाती हैं।

दो दुखों का एक सुख की मिरदुला, कानी, गफूरन, सवित्तरी, रामकली, गुलाबबाई, नूर, नसीम, करवा,

रेशमा, गणेशी, कृष्णाबाई आदि ऐसे स्त्री पात्र हैं जो आर्थिक विपन्नता के कारण इन घृणित कार्यों को करते हैं : "मिट्टी" कहानी में गणेशी, लालमन भिखारी के साथ रहकर भीख मांगती है लेकिन लालमन की मृत्यु की कल्पना पर ही गणेशी के सामने आजीविका की समस्या फिर से आने लगती है :

"लालमन की मृत्यु की कल्पना करना, गणेशी के लिए, अपने आप को ही डराना है। सत्रह अठारह वर्षों की फजीहतों से भरी जिंदगी के बाद अब थोड़ी सी राहत मिली है। चार पाँच सौ भी लालमन के लुढ़कने से पहले किसी तरह जमा हो जाते, तो एक फिर से कहीं पान बीड़ी की गुमटी लगाने की कोशिश करती"।⁽⁴⁾

इसी तरह चील कहानी में भी रामखिलावन की माँ निर्धनता के बीच ही अपना दम तोड़ देती है जो कि मानव को झकझोर कर रख देता है।

"सुहागिन"की पदमावती का विवाह गरीबी के कारण एक ताबे के घाट से कर दिया जाता है, पदमावती मन की व्यथा किसी से नहीं कह पाती है, और मरणासन्न भाई की मुक्ति के लिए इसी विवाह को अपनी नियति मान लेती है।

"यह तो एक दरिद्र परिवार की कन्या थी और कुरुपा। गोरे कपाल के तो काजल का टीका भी बहुत फबता है, मगर काले कपाल की रेखाएं तो चंदन के तिलक से भी उजली नहीं हो पाती है। सोने-चांदी के आसन पर तो शालिग्राम भी पूजा जाता है, मगर दान दहेज से रीती उस सूखे काठ जैसी काया को कौन देगा, अपने घर में बहू का आसन"।⁽⁵⁾

इस प्रकार गरीबी से लाचार स्त्री समर्पण व चुप रह कर अपनी वेदना को झेलती है। गरीबी के कारण समाज की उपेक्षा से तड़पती स्त्री परम्पराओं व संस्कारों का पालन करती है। उसके मन में उठने वाले अंतर्द्वंद्वों के साथ स्त्री अपनी नई जमीन तलाशती है।

(४) विधवा व परित्यक्त नारी जीवन : शैलेश मटियानी ने स्त्री जीवन के विविध पक्षों पर सूक्ष्मता के साथ प्रकाश डाला है। उन्होंने स्त्री जीवन के प्रत्येक कोने को झांक कर देखा है, इसीलिए उनकी रचनाओं में विधवा व परित्यक्त स्त्री जीवन की वेदना का यथार्थ चित्रण मिलता है। यह स्त्रियाँ, समाज के कठोर अंकुशों को सहते हुए उस मानसिकता को भी तोड़ती हैं जहाँ सिर्फ स्त्री को भोग्या माना जाता है। साहस पूर्वक प्रत्येक परिस्थिति का सामना करती हैं तो कहीं समाज द्वारा इन्हें छला जाता है। लेकिन फिर भी यह मजबूती के साथ स्वयं को खड़ा करने में सक्षम करती हैं।

तीसरा सुख, दुर्गुली, कपिला, रमौती, नाबालिक, कुसुमी, सीने में धंसी आवाज, लो तुम भी खा लो, माता, नंगा आदि कहानियों में शैलेश मटियानी ने विधवा व परित्यक्त स्त्री जीवन पर प्रकाश डाला है। "दुरगुली" कहानी में दुरगुली का पति छोड़ कर चला गया है। परिवार की सभी जिम्मेदारियाँ उसी के कंधे पर आ गई हैं। बच्चों के भरपूर पोषण के लिए उसे समाज के व्यंग्य भी सहने पड़ते हैं, और घूरकर देखने वाली निगाहों का सामना भी करना पड़ता है। पहले यह सब कुछ सहने की आदत नहीं थी लेकिन परिस्थितिवश अब समाज के अनुसार चलना सीख लिया है :

"पहले-पहले बड़ी कसकती रहती थी दुरगुली की आत्मा की जिन चंद्रबल्लभ, हयात सिंह को हाथ कमर पकड़ते उसने बुरी तरह लताड़ दिया था, उन्हीं के पास आखिर अपना जैसा मुँह लेके जाना पड़ा कि "गुरु जय हिंद हो! ओ हो रे" आज कल तो तुम गुसाई लोग एकदम निदुर जैसे हो गये हो। दुरगुली दुरगुली करने वाले

आज दूर से भी यह नहीं पूछते कि क्यों, ये दुरगुली तेरे बाल गोपाल कैसे है? कैसे तू इस अन्यायी गांव में अपनी विपदा के दिन गुजार रही है?"⁽⁴⁾

कपिला कहानी की विधवा पति की मृत्यु के बाद परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए परिवार का पालन पोषण करती है "गोपुली गफूरन" की गोपुली पति की मृत्यु के बाद आर्थिक संकटों का सामना करती है तथा धर्म बदल कर गफूरन बन जाती है। "गोपुली गफूरन हो गई कि बालकों के भूखों मारने की नौबत आ गई और भोपालसा ने उधार देना बंद कर दिया था"।⁽⁵⁾

इसी प्रकार माता कहानी की भगवती पति द्वारा परित्यक्त स्त्री है जो कि संयासिनी बन जाती है। लेकिन उसके अंदर का स्त्रित्व हिलोरे मारता है और वह मंदिर के पुजारी से विवाह कर मातृत्व का सुख प्राप्त करती है।

अतः कह सकते हैं कि शैलेश मटियानी के स्त्री पात्रों में परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेने की क्षमता है। इसी क्षमता के कारण यह जीवन की कठिनाइयों से संघर्ष करती दिखाई देती हैं।

(५) **नवीन दृष्टिकोण और नारी** : वर्तमान समय में नारी चेतना के कारण स्त्री के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है स्त्री परिवार व समाज में अपनी गरिमामय उपस्थिति से सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है। नवीन दृष्टिकोण के अनुसार वह सामाजिक रीतियों परम्पराओं में बदलाव चाहती है। स्त्री अपने अंदर इच्छा शक्ति के अनुसार स्वयं में बदलाव भी करती है जिससे वह अपने नए अस्तित्व का निर्माण करती है। "शार्पगंधा" उपन्यास की गायत्री एक विधवा ठकुरानी है वह पढ़ी लिखी है और हरिजन बस्ती में रहने वाले कृष्ण मास्टर से प्रेम विवाह करती है। गायत्री भावुक व कल्पनाशील औरत है जो कि, समाज की रूढ़ियों व परम्पराओं का विरोध तार्किकता के साथ करती है। वह समाज व परिवार के विरोध करने बाद भी कृष्ण मास्टर से विवाह करने का फैसला लेती है इसीलिए कृष्ण मास्टर उससे कहते हैं "आपको याद होगा, शूद्र के साथ रहने का फैसला कर लेने के जोखिमों से आपको मैंने आगाह किया था। इतना जरूर है, एक ऐसे कमजोर आदमी की तरह, जो देवी की प्रतिमा को सिर्फ इसलिए हाथों में लेने से डर रहा हो कि इतनी उसकी औकात नहीं। लालच जरूर था मेरे भीतर कि जैसे आपके आ जाने से मेरे अंधेरे जीवन में रौशनी भर जाएगी"।⁽⁶⁾

इसी प्रकार सवितरी उपन्यास की मीता पढ़ी लिखी तथा आधुनिक विचारों वाली महिला है, वह सवितरी का कठिनाइयों में साथ देती है तथा माँ की तरह अच्छे बुरे का ज्ञान भी देती है परिस्थितिवश गृहस्थ जीवन में आए मतभेद को दूर करने के लिए समझदारी से काम लेती है, "जिंदगी में कई प्रसंग ऐसे बन जाते हैं, सुनील के बाबू जब हम तो अपने आपको निर्दोष समझते हैं लेकिन दूसरों की बुराई हमसे हो जाती है"।⁽⁷⁾

छाक कहानी की उमा पति के विवाहेत्तर संबंधों के विषय में जानकार अपनी गृहस्थी को बचाने के लिए पति और प्रेयसी गीता के संबंधों को नए रूप में स्वीकार करती है, जो कि उसके प्रगतिशील विचारों का परिचय देते हैं आगे कभी मिलना हो तो मास्टरनी से, तो मुझे बताकर जाना।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि शैलेश मटियानी की रचनाओं में स्त्री अनेक कठिनाइयों को सहते हुए भी आदर्श की स्थापना करती है। सुख सुविधाओं को पाने के लिए कहीं पर वह भटकती है तो कहीं पर वह प्रेम में छली जाती है। कभी यह पति के द्वारा कटु वचनों से प्रताड़ित की जाती है लेकिन फिर भी स्त्री में ममता व करुणा का भाव कम नहीं होता। आर्थिक संकटों के कारण परिवार व बच्चों के पालन पोषण के लिए समझौता

भी करती है तथा अपने अस्तित्व के लिए नई जमीन भी तलाशती है। शैलेश मटियानी नारी के प्रति अपने विचार इस प्रकार प्रकट करते हैं, "स्त्री तत्व भी क्या है! भीतर रखिए, ओट में, तब पूरी दिखती है भूमि। अन्यथा सबके ऊपर आवरण है। उस आवरण के भीतर वस्तुएँ ज्यादा खुली और विस्तृत हैं। आलौकिकता सिर्फ आवरण में है भूमि अपने प्रत्येक अंश में आंचल के भीतर अलग है, बाहर अलग है"।⁽¹²⁾

अतः शैलेश मटियानी के कथा साहित्य में स्त्री भटकाव, अलगाव और विडंबनाओं के बाद भी डटकर संघर्ष करती है। दमन, अत्याचार व घृणा से प्रताड़ित होकर भी न्याय की मांग करते हुए अपनी गरिमामय उपस्थिति का बोध कराती है।

संदर्भ पुस्तकें :

1. शैलेश मटियानी, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, पृष्ठ संख्या २४ (अर्धांगिनी)
2. शैलेश मटियानी, छिददा पहलवान वाली गली, पृष्ठ संख्या ४१ (महाभोज)
3. शैलेश मटियानी, पापमुक्ति तथा अन्य कहानियाँ, पृष्ठ संख्या ८१ (कुसुमी)
4. शैलेश मटियानी, बावन नदियों का संगम, पृष्ठ संख्या २६०
5. शैलेश मटियानी, सवित्तरी, पृष्ठ संख्या १५७
6. शैलेश मटियानी, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, पृष्ठ संख्या ४८ (मिटटी)
7. वही..... पृष्ठ संख्या ३८ (सुहागिन)
8. शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग ५, पृष्ठ संख्या ६२ (दुर्गुली)
9. शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग २, पृष्ठ संख्या ४७१ (गोपुली गफूरन)
10. शैलेश मटियानी, सर्पगंधा, पृष्ठ संख्या ६६
11. शैलेश मटियानी, सवित्तरी, पृष्ठ संख्या २१-२२
12. शैलेश मटियानी की इक्यावन कहानियाँ, पृष्ठ संख्या २३६ (उत्तरापथ)



स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित
JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES PRINT RESEARCH JOURNAL

<https://bohalshodhmanjusha.com/>

Vol. 24

ISSUE-2, Part-2

(अगस्त 2026)

ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिथ., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल

कार्यकारी सम्पादक :

प्रो. शकुन्तला चौहान

शामली, उत्तर प्रदेश।

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

